“आगे बढ़ो!”

स्वामी ईश्वरानन्द

३ जुलाई, १९७५ को, टोकियो से रात भर की हवाई यात्रा करके मैं ओकलैन्ड स्थित सिद्धयोग आश्रम पहुँचा। सायंकालीन सत्संग शुरू होने ही वाला था। सत्संग के सूत्रधार ने सबका स्वागत किया और ‘ॐ नमः शिवाय’ की धुन का परिचय दिया।

मैं बहुत खुश था और उत्सुकता से इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि पहली बार मुझे बाबा जी के दर्शन होंगे, पर उस अँधेरे-से हॉल में संकीर्तन के साथ झूमते हुए, ज़मीन पर बैठे-बैठे ही मुझे झपकी-सी आ गई। फिर मेरे मणिपूर चक्र में से एक तेजोमय स्वर्णिम प्रकाश फूट पड़ा और इसी के साथ मेरी नींद टूट गई। मैंने आँखें खोलीं और देखा कि बाबा जी ने उसी समय हॉल में प्रवेश किया है।

बाबा जी, हॉल के सामने के भाग में स्थित अपने आसन की ओर बढ़े, आसन ग्रहण किया और हमारे साथ संकीर्तन करने लगे। मैं बाबा जी के सुन्दर स्वरूप को बारीकी से निहार रहा था, तभी एक असाधारण बात हुई। बाबा जी का चेहरा नीलप्रकाश से ढक गया और फिर एक के बाद एक, भिन्न-भिन्न परम्पराओं के अनेक सन्तजनों के चेहरों में बदलने लगा। उनमें से एक साफ़े व दाढ़ी में थे; दूसरे महात्मा का सिर मुँड़ा हुआ था। एक भारतीय सन्त लग रहे थे तो एक मंगोलियन, तथा कुछ सन्त-महात्मा यूरोप के थे—और सभी अपनी-अपनी विशिष्ट वेशभूषाओं में थे।

अन्त में, वह पुनः बाबा जी का चेहरा हो गया और मुझे अपने हृदय में एक आवाज़ सुनाई दी, *यही हैं वे। यही हैं वे, महान बलिदानी जिन्होंने सबके लिए अपना सब कुछ अर्पित कर दिया है!* मुझे अन्तर में सहज ही मालूम हो गया कि श्रीगुरु का स्वरूप मेरे समक्ष प्रकट किया जा रहा है। श्रीगुरु वे महान विभूति हैं जिन्होंने ईश्वर के लिए अपना जीवन पूरी तरह समर्पित कर दिया है और इस संसार में मानवता की सेवा करने के लिए वे ईश्वर की कृपा के वाहक बन गए हैं। मुझे यह दर्शाया जा रहा था कि बाबा जी ऐसी ही एक महान विभूति हैं।

आप कल्पना कर ही सकते हैं कि जब बाबा जी से जाकर मिलने का समय आया तो मैं कितना रोमांचित था। मैं जापान से लाए हुए बहुत-से उपहार लिए हुए था जो मेरी सत्य की खोज के प्रतीक थे और उन्हें मैं बाबा जी को अर्पित करने जा रहा था। मैंने सुना था कि बाबा जी अंग्रेज़ी बहुत कम बोलते हैं तो मैं बहुत उत्सुक था कि वे मुझसे बात करने के लिए किन शब्दों का प्रयोग करेंगे।

मैं दर्शन की पंक्ति में खड़ा हो गया और अन्ततः जब बाबा जी के आसन के समक्ष पहुँचा तो अपने साथ लाए हुए सभी उपहार मैंने दर्शन-टोकरी में रख दिए। फिर मैंने जापान में प्रचलित, औपचारिक तरीक़े से धीरे-धीरे बाबा जी को नमन किया जिसे मैंने जापान में सीखा था; इसमें मुझे समय लगा। मेरा माथा ज़मीन को छूने ही वाला था कि मैंने बाबा जी को ज़ोर-से व स्पष्ट रूप से अंग्रेज़ी में कहते हुए सुना, "Move!" ["मूव" अर्थात् "आगे बढ़ो!"]

मैं तुरन्त दर्शन-पंक्ति से बाहर जाने वाले मार्ग से अपने स्थान की ओर बढ़ा और आकर वहाँ बैठ गया। चलते हुए मैंने मुड़कर बाबा जी की ओर देखा और सोचा, *क्या सच में ऐसा हुआ है?* बाबा जी मेरी ही ओर देखकर सिर हिला रहे थे मानो मुझे आश्वस्त कर रहे हों, *हाँ। मैंने कहा, "Move!" ["मूव"]*

जब मैं अपने स्थान पर आकर बैठा, बाबा जी के शब्द "Move" [मूव] का एक अर्थ स्वयं ही प्रकट हो गया। मुझे महसूस हुआ मानो बाबा जी कह रहे हों, *हाँ, गुरु के रूप में मैं तुम्हें लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाऊँगा। परन्तु यह उस प्रकार नहीं होगा जैसी तुम्हें अपेक्षा है। इसलिए आगे बढ़ो ["मूव"]—अपनी अपेक्षाओं को छोड़ दो!*

सिद्धयोग पथ पर चलते हुए इन सैंतालीस वर्षों में, मेरे जीवन में बहुत गतिशीलता रही है। मैं देख रहा हूँ कि आरम्भ से ही, जैसे-जैसे मैं अपनी सीमित धारणाओं को छोड़कर श्रीगुरु की सिखावनियों को अपनाता रहा हूँ, मैं अन्धकार से प्रकाश की ओर स्थिरतापूर्वक बढ़ा हूँ; सीमित पहचान व संकुचितता के स्थान से स्वतन्त्रता, व्यापकता व आनन्द के स्थान की ओर बढ़ा हूँ!

जो प्रथम शब्द बाबा जी ने मुझसे कहा था, "मूव" [Move], आज मैं उसमें निहित रूपान्तरणकारी शक्ति व कृपा को देख रहा हूँ। और मैं अब भी आगे बढ़ रहा हूँ।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।